>

Title: Need to make Library Acts on national level in the country.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदय, इसी साल कवि गुरू रविन्द्र नाथ टैगोर जी की 150वीं जयन्ती मनायी गयी, स्वामी विवेकानन्द की भी 150वीं जयन्ती इसी साल मनायी जा रही है, गोपाल सिंह नेपाली कविवर की भी 100वीं जयन्ती, इससे पहले डॉ राम मनोहर लोहिया जी की 100वीं जयन्ती और पंडित मदन मोहन मालवीय की भी 150वीं जयन्ती मनायी जा रही है। कांग्रेसी लोग मदन मोहन मालवीय जी को भुल गये। उनकी 150वीं जयन्ती मनायी जा रही है, लेकिन इन्हें कुछ भी पता नहीं है। उसी जयन्ती के फलस्वरूप अभी-अभी मावलंकर हाल में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर न्यास के लीडर की ओर से पुस्तक संस्कृति महोत्सव में देश-विदेश के जाने-माने विद्वानजन जुटे हुए हैं। उसमें बड़ी संख्या में लोग जुटे हैं। उसमें बाबा साहब अंबेडकर, महात्मा गांधी के संवाद का प्रदर्शन हो रहा है और उस जयंती पुस्तक संस्कृति महोत्सव के माध्यम से देश में पुस्तकालय संबंधी कानून बने, क्योंकि कुछ ही राज्यों में पुस्तकालय का कानून है, देश भर के सभी राज्यों में पुस्तकालय का कानून नहीं है, इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय का कानून बने। पुस्तक संस्कृति नौजवानों के लिए और देश के नागरिकों के लिए उत्सव के रूप में मनायी जाए, पुस्तक संस्कृति फैलायी जाए। चूंकि मदिरालय नहीं, पुस्तकालय चाहिए, शराब नहीं, किताब चाहिए। इस संस्कृति को विकसित करने के लिए भारत सरकार पुस्तकालयों को बढ़ाने के लिए इसे मिशन के रूप में तैयार करे। पुस्तकालय से संबंधित वह कानून बनाये और मिशन के रूप में इसे लागू करे। तब हमारा देश दुनिया के मुल्कों की अगली पंक्ति में आएगा और उसे विश्व शक्ति होने से कोई रोक नहीं पाएगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका ध्यान आकृष्ट करता हूं।